समाजसेवा का शौक, पर कोविड हेल्थ सेंटर के नाम पर धंधा

भाजपा के मंडल प्रभारी ने अपने होटल में 8000 रुपये रोज पर मरीज भर्ती का ऐलान किया

मजदूर मोर्चा ब्यूरो

फरीदाबाद: समाजसेवा का दम भरने वाले भाजपा और आरएसएस के नेताओं की कलई शहर में अपने आप खुल रही है। उन्होंने आपदा में अवसर को जमकर भुनाना शुरू कर दिया है। एनएच 3 के डी ब्लॉक में चल रहे रॉयल्स होटल में 12 मई को कुछ ऐसा ही हुआ। यहां पर पूरे गोदी मीडिया की बरात जमाकर जोरशोर से समाजसेवा का प्रचार किया गया लेकिन समाजसेवा का यह फ्रॉड तब सामने आया जब होटल पर बैनर लगाया गया कि यहां पर प्रतिदिन 8000 रुपये लगेंगे और कोरोना मरीजों का इलाज होगा। यह होटल भाजपा के एनआईटी मंडल के अध्यक्ष अमित आहूजा का है।

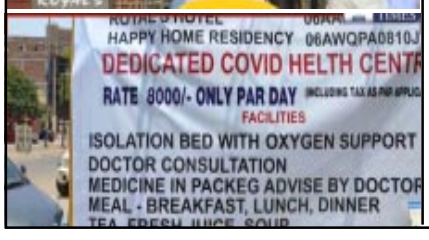

सीमा त्रिखा क्यों पहुंची इसका उद्घाटन करने

भाजपा नेता अमित आहूजा का होटल इन दिनों खास चल नहीं रहा था तो उन्होंने आपदा में अवसर को बदलने का दांव खेल दिया। उन्होंने अपने होटल को बाकायदा कोविड हेल्थ सेंटर घोषित कर दिया। लेकिन बिना किसी विधायक और प्रशासन के संरक्षण के ऐसे काम को अंजाम नहीं दिया जा सकता, तो उन्होंने क्षेत्रीय भाजपा विधायक सीमा त्रिखा और आरएसएस के गंगा शंकर को बुलाकर कोविड हेल्थ सेंटर का उद्घाटन करा दिया। इस तरह भाजपा विधायक सीमा त्रिखा ने जनप्रतिनिधि होने के बावजूद एक व्यावसायिक गतिविधि को बढ़ावा देने का घटिया काम किया। भाजपा की परंपरा के मुताबिक भाजपा विधायक, सांसद, मंत्री ऐसे कार्यक्रमों में नहीं जाते, जिसका इस्तेमाल व्यावसायिक गतिविधियों के लिए होने जा रहा हो। सीमा त्रिखा और उनके साथ आये भाजपा के बाकी नेताओं और गोदी मीडिया के पत्रकारों ने अमित आहूजा को महान समाजसेवी बता डाला। कई पत्रकार तो कार्यक्रम को लाइव के दौरान ही इस कथित कोविड हेल्थ सेंटर का प्रचार करते नजर आए।

बता दें कि कई कारोबारियों ने अपने व्यावसायिक स्थल को कोविड सेंटर में बदला है लेकिन वहां मरीजों का मुफ्त इलाज हो रहा है। वे अमित आहूजा की तरह निर्लज्जता से हर मरीज से आठ हजार रुपये चार्ज नहीं करते। हाल ही में ग्रेटर फरीदाबाद में ओमेक्स ने ऐसा ही कोविड सेंटर मरीजों के लिए मुफ्त खोला है, जिसका निरीक्षण करने डीसी यशपाल यादव भी पहुंचे थे। लेकिन अमित आहूजा की तरह ग्रेटर फरीदाबाद में डीपीएस स्कूल में कुछ उद्योगपतियों ने पहले तो मुफ्त इलाज वाला कोविड सेंटर खोलने की घोषणा जोर-शोर से की लेकिन बाद में वहां भी कुछ पैसा लेकर भर्ती करने की घोषणा की गई लेकिन उन्होंने भी अपना रेट प्रतिदिन 8000 रुपये नहीं रखा।

पाठकों को याद होगा कि आरएसएस का गंगाशंकर शहर में तमाम जगहों पर प्रचार करता घूमता है कि संघ और भाजपा किस तरह समाजसेवा के काम में जुटे हुए हैं, जबकि ये सारी की सारी गतिविधियां व्यावसायिक हैं। पिछले अंक में हमने सेक्टर 14 के नशा मुक्ति केंद्र की खबर छापी थी, जिसे रेडक्रॉस सोसायटी चलाती है। लेकिन गंगा शंकर ने प्रचार किया कि संघ का संगठन सेवा भारती और भारत विकास परिषद उस सेंटर को चला रहे हैं।

8000 रुपये में यहां क्या-क्या मिलेगा

अमित आहूजा के इस व्यावसायिक कोविड सेंटर में जो मरीज रोजाना 8000 रुपये देगा, उसे आक्सीजन सपोर्ट के साथ आइसोलेशन बेड, डॉक्टरी सलाह, पैकेज में दवाइयां भी शामिल जो डॉक्टर लिखेगा, ब्रेकफास्ट, लंच, डिनर, चाय, ताजा जूस और सूप भी मिलेगा। कौन-कौन डॉक्टर सलाह के लिए उपलब्ध होंगे, इसकी जानकारी होटल मालिक अमित आहूजा के पास उपलब्ध नहीं है। न ही वो उन अस्पतालों के नाम बता पाये, जहां के डॉक्टर हर विजिट पर पैसा लेंगे। बहुत स्पष्ट है कि होटल में कमरे और बेड तो पहले से ही लगे हुए थे। अतिरिक्त जुगाड़ सिर्फ आक्सीजन सिलेंडर का किया गया है। विशेषज्ञ डॉक्टर तो इस कोविड सेंटर में आने से रहे। ऐसे में झोलाछाप या सस्ते डॉक्टरों को बुलाकर काम चलाया जाएगा तो कोई हैरानी की बात नहीं होगी। नियमानुसार अगर कोई नया कोविड सेंटर बना रहा है तो उसे डॉक्टरों के बारे में पारदर्शिता रखनी पड़ती है, बताना पड़ता है कि कौन-कौन से डॉक्टर उपलब्ध रहेंगे। भाजपा नेता अमित आहूजा के समर्थक प्रतिदिन आठ हजार रुपये के पैकेज को यह कहकर जायज ठहरा रहे हैं कि तमाम अस्पताल तो रोजना 40 हजार रुपये वसूल रहे हैं। हमने तो बहुत कम रेट रखा हुआ है। पैसा कम लेना भी एक तरह की समाजसेवा है।

होटल के नाम पर अवैध निर्माण

सूत्रों ने बताया कि अमित आहूजा शुरू से ही विधायक सीमा त्रिखा से जुड़े हुए हैं और उनके चुनाव की न सिर्फ कमान संभालते हैं, बल्कि चुनाव में जमकर भारी पैसा खर्च करते हैं। भाजपा सत्ता में 2014 में आई, उससे पहले अमित आहूजा न कोई बड़ा नाम था और न ही उनका कोई होटल था। लेकिन सीमा त्रिखा की छत्रछाया में जब एनआईटी के तमाम रिहायशी इलाकों में अवैध मॉल, शापिंग कॉम्पलैक्स, दुकानें, बैंक्वेट हॉल, रेस्टोरेंट, ढाबे खड़े होने लगे तो अमित आहूजा ने भी सीमा त्रिखा की सलाह पर एक होटल एनएच 3डी-14 बीपी में खड़ा कर दिया। यहां ये भी बताना जरूरी है कि इसी एक बिल्डिंग में दरअसल दो नाम से होटल चल रहे हैं, जिसमें एक का नाम रॉयल्स है तो दूसरे का नाम हैप्पी होम रेजीडेंसी है। दोनों के बिजनेस कोड अलग-अलग हैं। बहरहाल, नगर निगम फरीदाबाद (एमसीएफ) ने इसे अवैध निर्माण मानते हुए इसे भी नोटिस दिया था लेकिन विधायक का सीधा संरक्षण होने की वजह से नगर निगम कुछ कर नहीं पाया। इस तरह 2014 में भाजपा के सत्ता में आते ही अमित आहूजा जैसे लोगों की किस्मत भी बदल गई।

पुलिस को ओयो का धंधा मंजूर, सड़क पर बैठा पेपर बेचने वाला खटकता है

लॉकडाउन में शटर गिराकर खाकी के संरक्षण में चलता है होटल

मज़दूर मोर्चा ब्यूरो

फ़रीदाबाद : लॉकडाउन में पुलिस के सारे नियम क़ानून सिर्फ़ छोटे दुकानदारों, रेहड़ी-पटरी पर सामान बेचने वाले और अख़बार बेचने वाले हॉकरों के लिए हैं। लेकिन शहर में "ओयो" के नाम पर कुकुरमुत्तो की तरह उग आए होटलों में हर तरह का धंधा पुलिस की देखरेख में जारी है।

होटलों को पुलिस का संरक्षण

शहर में चल रहे तमाम ओयो होटलों को पुलिस का संरक्षण मिला हुआ है। इन होटलों में लॉकडाउन के बावजूद कपल्स दो-तीन घंटे के लिए होटल बुक कराते हैं और चुपचाप निकल जाते हैं।

ओल्ड फ़रीदाबाद चौराहे से जब आप रेलवे रोड पर बढ़ते हैं तो एक होटल है 555, यहाँ पर चार-पाँच कमरे कपल्स से हर समय भरे रहते हैं। अगर आप अकेले कमरा बुक कराने जाएँगे तो आपको काफ़ी पूछताछ का सामना करना पड़ेगा। लेकिन कपल्स को देखते ही कमरे की चाबी हवाले कर दी जाती है।

मज़दूर मोर्चा संवाददाता ने खुद इस होटल में पहुँचकर कमरे बुक कराने की कोशिश की। हमने बताया कि हमारे दस-बारह रिश्तेदार बाहर से आ रहे हैं, उनके लिए कमरे चाहिए। होटल मालिक ने बताया कि उसके यहाँ पाँच कमरे तो हर समय बुक रहते हैं। पाँच कमरे ही मिलेंगे लेकिन आसपास चार-पाँच कमरों का इंतज़ाम हो जाएगा। एक कमरे का हज़ार रूपये लेंगे। यह पूछने पर कि पुलिस तो परेशान नहीं करेगी। होटल वाले ने कहा कि पुलिस की चिन्ता होटल पर छोड़ दो। अपने उनसे अच्छे रिलेशन हैं। हम उन्हें "खुश" रखते हैं। इसी बातचीत के दौरान एक कपल बाइक से आया, उसे फ़ौरन किसी कमरे की चाबी थमा दी गई।

होटल 555 के मालिक का नाम वर्लिन अग्रवाल है। वो बल्लभगढ़ में रहता है लेकिन उसका धंधा ओल्ड चौराहे पर चलता है। बताते हैं कि शहर में उसके कई ओयो रूम्स हैं। मज़दूर मोर्चा संवाददाता इसके बाद ओल्ड चौराहे पर होटल 777 पहुंचा। यहाँ पर भी चार-पाँच कमरे देने की ही बात की गई। यहाँ भी पुलिस से किसी तरह की समस्या न आने का वादा किया गया। होटल कर्मचारी ने बताया कि यहाँ सभी पुलिस वाले हमारे मालिक को जानते हैं। पुलिस वाले यहाँ खुद आते हैं तो आपको कोई दिक़्क़त नहीं आएगी। ओल्ड चौराहे से लेकर बडखल चौराहे तक हर ओयो होटल वाला पुलिस से परेशान न किए जाने की गारंटी लेने को तैयार दिखा।

सेक्टर 21 और एनआईटी में एमएच 1, 2, 3 और 5 में होटल में कई कमरे देने से मना कर दिया गया। उन लोगों ने कहा कि हमारे यहाँ बुकिंग तीन-चार घंटे की रहती है। ग्राहक आते रहते हैं। हमारी प्राथमिकता पहले कपल्स हैं फिर कोविड मरीज़ों के तीमारदार। उन्होंने बताया कि कपल्स से हम एक हज़ार ही लेते हैं लेकिन कोविड मरीज़ों के तीमारदारों से दो हज़ार एक दिन का लेते हैं। कोविड मरीज़ों के तीमारदार से डबल रेट लेने की वजह इसमें रिस्क होना बताया गया जबकि कपल्स से कोई रिस्क नहीं है। वे बेचारे दो-तीन घंटे में पैसे देकर चले जाते हैं। यह पूछे जाने पर कपल्स को पुलिस परेशान नहीं करती। होटल वालों ने बताया कि साहब, ये बिज़नेस है। पुलिस को सेट किए बिना आप बिज़नेस नहीं कर सकते। जब हम कमाई करते हैं तो उन्हें "खुश" रखने में अपना क्या जाता है?

रेस्टोरेन्ट वालों के भी मजे

लॉकडाउन में चाय की दुकान तो बंद है लेकिन रेस्टोरेन्ट और ढाबा चलाने वालों को होम डिलीवरी की छूट मिली हुई है। लेकिन सेक्टर 19 में साँझा चूल्हा जैसे रेस्टोरेन्ट कमाई में पीछे नहीं है। दुकान शटर गिरा हुआ है लेकिन अंदर आठ-दस लोग अपनी खाने-पीने की पार्टी करते नज़र आ जाएँगे। लेकिन ये ढाबा मालिक के बहुत ही पहचान वाले पुराने ग्राहक होते हैं जिन्हें एंट्री मिली होती है। बिना जान पहचान वालों को लौटा दिया जाता है। साँझा चूल्हा की तरह शहर के जितने भी मशहूर ढाबे हैं, उनका यही हाल है। शटर डाउन करके धंधा जारी है। दूसरी तरफ़ चाय-बिस्किट बेचने वाले छोटे और गरीब दुकानदारों का धंधा बंद है

हालाँकि रेस्टोरेन्ट या ढाबे के अंदर बैठने का दबाव ग्राहक ही बनाते हैं, ढाबा मालिक यही चाहता है। वो ज़्यादा रेट पर डिश देता है। कई ढाबे वालों ने बताया कि पुलिस वाले साहबों के लिए हम खाना वग़ैरह पैक कर देते हैं। वे बेचारे हमारी मजबूरी समझते हैं। कोई -कोई पैसे माँगता है तो देने पड़ते हैं।

रेहड़ी वालों और हॉकरों की आफ़त

पुलिस का सारा ज़ोर रेहड़ीवालों और मामूली सामान बेचने वाले हॉकरों पर है कि वे नहीं दिखने चाहिए। गलती से भी पुलिस को अगर कहीं सब्ज़ी बेचने वाला या मामूली चीज बेचने वाला दिख जाता है तो वह उन पर टूट पड़ती है। सुबह-सुबह अख़बार उठाने वाले हॉकरों तक को वह तंग करती है, जबकि उनका काम एक-दो घंटे का होता है। महत्वपूर्ण बात यह है कि अख़बार से जुड़ा हर काम आवश्यक सेवा में आता है, जिसमें अख़बार का वितरण भी शामिल हैं लेकिन पुलिस को सबसे ज़्यादा चिढ़ हॉकरों से है। एक तरफ़ तो ओल्ड फ़रीदाबाद, बडखल मोड़ चौराहे के तमाम होटल वालों को पुलिस संरक्षण हासिल है तो दूसरी तरफ़ हॉकर्स पुलिस वालों को खटकते हैं।

फ़रीदाबाद की नैंसी मर कर भी अमर हो गई

मज़दूर मोर्चा ब्यूरो

फरीदाबाद में ब्रेन डेड हुई 32 वर्षीय सॉफ्टवेयर इंजीनियर नैंसी शर्मा की वजह से 9 लोगों को नई जिंदगी मिली है। नैंसी के ब्रेन डेड घोषित होने पर उनके पिता अशोक शर्मा ने अपनी बेटी के अंगदान करने का निर्णय लिया। नैंसी का हार्ट, किडनी, आंख, लीवर 9 लोगों को लगे।

नैंसी के भाई डॉ. सौरभ शर्मा ने बताया कि 12 मार्च को उनकी बहन अम्बाला अपने पिता से मिलने गई थी। वहां कुछ तकलीफ हुई। नैंसी को एक निजी अस्पताल में उसे भर्ती कराया गया। डॉक्टरों ने बताया कि नैंसी का ब्रेन डेड हो गया है। इसके बाद नैंसी को पीजीआई चंडीगढ़ ले जाया गया। कई दिन इलाज चला।

डॉक्टरों ने कहा कि नैंसी की बचने की उम्मीद नहीं है, हालांकि ब्रेन डेड के बावजूद बाकी अंग काम कर रहे थे। डॉक्टरों ने कहा अगर उनके बाकी अंग दान कर दिए जाते हैं, तो कई लोगों को नई जिन्दगी मिल सकती है।

नैंसी के पिता बोले-बेटी कहती थी, ऐसा काम करूंगी कि लोग याद रखेंगे। वो ऐसा कर भी गई। बेटी के चले जाने का दुख हमेशा रहेगा, लेकिन सुकून है कि उसका दिल दुनिया में धड़क रहा है। उसकी आंखें आज भी दुनिया को देख रही हैं।

नैंसी पेशे से सॉफ्टेवयर इंजीनियर थी। पति अनुदीप शर्मा भी गुड़गांव में सॉफ्टवेयर इंजीनियर हैं। सात साल का बेटा है। बेटी ब्रेन डेड हुई तो दामाद से बात की। 6 अप्रैल को परिवार की सहमति से बेटी के अंग दान करने के लिए निर्णय लिया, लेकिन जब पेपर पर सिग्नेचर करने का समय आया तो हाथ कांपने लगे।

नैंसी का हार्ट 13 साल की बच्ची को प्रत्यारोपित किया गया। किडनी भी दो लोगों को दी गई। लीवर के चार पार्ट भी चार लोगों को डोनेट किए गए।

आंखों से दो लोगों को रोशनी मिली। इससे पहले शायद ही किसी के इतने अंग दान हुए हों। इसमें डॉक्टरों का योगदान भी सराहनीय रहा।

मोहाली एयरपोर्ट तक ग्रीन कॉरिडोर बना कर इन अंगों को हवाई जहाज से नोएडा, दिल्ली और चंडीगढ़ जरूरतमंद लोगों तक पहुंचा कर ट्रांसप्लांट कराया गया। परिजनों ने फरीदाबाद पहुंच कर नैंसी की तेरहवीं मनाई। इसमें हर शख्स ने नैंसी को सलाम किया।